



Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"



॥ गणेश चतुर्थी 2026: तिथि एवं शुभ मुहूर्त ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ गणेश चतुर्थी 2026: तिथि एवं शुभ मुहूर्त ॥

गणेश चतुर्थी 2026 का पर्व सोमवार, 14 सितंबर 2026 को मनाया जाएगा। यह पर्व भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि को भगवान श्रीगणेश के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है।

गणेश चतुर्थी 2026 की तिथि

गणेश चतुर्थी: सोमवार, 14 सितंबर 2026

चतुर्थी तिथि प्रारंभ: 14 सितंबर 2026, सुबह 7:06 बजे

चतुर्थी तिथि समाप्त: 15 सितंबर 2026, सुबह 7:44 बजे

गणेश विसर्जन / अनंत चतुर्दशी: शुक्रवार, 25 सितंबर 2026

गणेश चतुर्थी पूजा का शुभ मुहूर्त

गणेश जी की पूजा के लिए मध्याह्न काल को विशेष रूप से शुभ माना जाता है, क्योंकि धार्मिक मान्यता के अनुसार भगवान गणेश का जन्म मध्याह्न काल में हुआ था।

जयपुर के लिए गणेश चतुर्थी 2026 पूजा मुहूर्त:

सुबह 11:08 बजे से दोपहर 1:36 बजे तक।

नोट: पूजा का मुहूर्त स्थान के अनुसार कुछ मिनट आगे-पीछे हो सकता है। इसलिए वेबसाइट पर समय देते समय शहर का नाम स्पष्ट करना बेहतर रहेगा।

गणेश चतुर्थी पर चंद्र दर्शन

गणेश चतुर्थी के दिन चंद्रमा के दर्शन से संबंधित एक पारंपरिक मान्यता है। इस दिन शाम के समय चंद्र दर्शन से बचने की परंपरा बताई जाती है, क्योंकि इसे मिथ्या दोष से जोड़ा जाता है। चंद्र दर्शन से बचने का समय स्थान के अनुसार अलग-अलग होता है।